शुभ संकल्प की ज्योत

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रकाश में रहना
एक व्यक्ति के हृदय की सबसे प्यारी चाह होती है
अतः, यह सौभाग्य की बात है कि प्रकाश प्रत्येक त्योहार का
एक अभिन्न अंग होता है

जो बात दीपावली को विशिष्ट बनाती है
वह यह कि प्रकाश इसका केन्द्रण है—
प्रकाश सर्वोपरि,
जीवन्त ज्योत

दीपावली की रात वातावरण
हज़ारों, लाखों, करोड़ों ज्योतियों से चमचमाता है
प्रत्येक ज्योत अनगिनत आशीर्वादों की वर्षा करती है

प्रत्येक दीप को अपने दृढ़ संकल्प से प्रज्वलित करो
प्रत्येक दीप को अपनी हार्दिक अभिलाषा से प्रज्वलित करो
प्रत्येक दीप को इस बोध के साथ प्रज्वलित करो
कि तुम्हारी यह पूजा
भगवान के श्रीमुख पर मुस्कुराहट ला रही है

शुभ दीपावली

***

जितना घनघोर अँधेरा छाया होता है
उतनी ही ज़ोर-से अज्ञान अपना प्रभाव जमाता है
जितनी भरपूर रोशनी छाई होती है
उतनी ही ज़ोर-से ज्ञान अपना प्रभुत्व दर्शाता है
अन्धकार एवं प्रकाश सदियों से आपस में लड़ते आ रहे हैं
और शताब्दियों से भी आगे तक
इनका प्रबल संग्राम चलता रहेगा
यूँ तो ये दोनों शक्तियाँ अपने-अपने क्षेत्र में
यह ज़ाहिर करने में हिचकिचाती नहीं कि वहाँ उनका राज है
मगर जय उस इंसान की होगी जो
अन्धकार और प्रकाश की प्रकृति को समझकर
इन दोनों से तदनुसार सही रिश्ता जोड़ेगा

लोगों का स्वभाव भी पृथक-पृथक है
किसी का लगाव अँधियारे से है तो
किसी की मनोवृत्ति उजाले की तरफ़ जाती है
कौन अच्छा है और कौन बुरा,
इस वाद-विवाद में ही मनुष्य की ज़िन्दगी
अदृश्य हो जाती है
यह तर्क-वितर्क न आज शुरू हुआ है न दशाब्दियों से
यह गरमागरमी, यह बहस तो चलती ही आ रही है
कहीं पेड़ों की शाखाओं तले
कहीं घर-चौबारों में
कहीं गाँवों के चौपालों में
कहीं पण्डालों के नीचे
कहीं चौक-चौराहों पर
प्रमुख बात क्या है?

यही कि सहस्त्रों जीवन इस चर्चा की बलि चढ़ गए हैं
विडम्बना यह है कि अपने बारे में
हर एक की धारणा है,
"मैं ही अच्छा हूँ,
मैं ही श्रेष्ठ हूँ,
मैं ही योग्य हूँ,
मैं ही प्रशंसनीय हूँ"—
वग़ैरह, वग़ैरह

तम को अपनाने वाले और आलोक को गले लगाने वाले—
दोनों दलों में है बल
दोनों पक्षों में है दमख़म
दोनों ओर चुम्बक का प्रताप है
अब भरोसा किस पर करें?
हर इंसान का कर्तव्य क्या है?

इस द्वन्द्व से मुक्ति पाने के लिए
हम तेजस्वी और ज्ञानी ऋषि-मुनियों के
पाण्डित्य का सहारा लेते हैं
उनके प्रज्ञान पर भरोसा रखते हैं
वह सब जो उनके पास देने के लिए है, हम उसमें आस्था रखते हैं—
यह यक़ीन रखते हैं कि हम उनके ज्ञान को आत्मसात् कर सकते हैं
हम दृढ़ विश्वास रखते हैं कि वह फलीभूत होगा
हम उनके विवेक को अंगीकार करते हैं
श्रीगुरु की उपासना करते हैं
श्रीगुरु से शिक्षा प्राप्त करते हैं
श्रीगुरु-दर्शित मार्ग का अनुसरण करते हुए
अपने आपको स्थिरता देते हैं

याद रखो कि सबके लिए 'सुन्दरता' का अनुभव
उनके अपने-अपने कर्म,
उनके अपने-अपने हालात और
उनकी अपनी-अपनी जीवन-शैली पर निर्भर है
इसीलिए, इस शुभ दीपावली के अवसर पर,
अपने संकल्प को शुद्ध करने के लिए प्रयत्न करो
जितना ध्यानपूर्वक तुम प्रयत्न करोगे
उतना ही लाभ प्राप्त करोगे

यह देखो न,
दीप जलते-जलते तुम्हें रम्य जीवन देता है
तिमिर गाढ़ा होते-होते तुम्हें निगल लेता है
जब तुम घुप अँधेरे में गुम हो जाते हो
तभी तुम्हें इसका भान होता है
सच कहो तो
आध्यात्मिक वृत्ति वाले व्यक्ति के लिए
गोचर और अगोचर खुशी
की आभा ही उसका सम्बल है

हाँ, शुभ दीपावली तुम्हें भी!
एक बात बोलूँ?
तुम्हारा जीवन प्रकाशशून्य है
या प्रकाश से ओत-प्रोत है
इस ऊहापोह में न पड़कर
बस, ऐसा संकल्प करो कि

दीपावली त्योहार की द्युतिमा
तुम्हारे भीतर अनन्त काल तक बसे
उसकी ऊर्मि तमाम पापों का निवारण करे
अन्तर की दीप्ति सर्वदा निरामय रहे
अन्तर्ज्ञान हरदम प्रज्वलित रहे
और तुम सदैव सतर्क रहकर अपनी सूझबूझ का उपयोग करो
तुम्हें जिस भी चुनौती का सामना जीवन में करना पड़े
यह ख़याल रखो कि मन में दहशत घर न कर ले
तुममें यह योग्यता और यह अन्तर-शक्ति है कि तुम इन चुनौतियों को
एक दीपमाला में परिवर्तित होने दो

तुम्हारी अन्तरज्योत स्वप्रकाशित है
उसकी दिव्यता तुम्हें अन्तर्मुखी करे ऐसा होने दो

अपनी अन्तरज्योत की देखभाल करो

अपनी अन्तरज्योत का पोषण करो

अपनी अन्तरज्योत से बात करो

अपनी अन्तरज्योत के लिए गाओ

अपनी अन्तरज्योत के साथ नृत्य करो

अपनी अन्तरज्योत की मृदुलता को श्वास में भरो...
अपनी अन्तरज्योत की सुषमा को श्वास में भरो...
अपनी अन्तरज्योत की पूर्णता को श्वास में भरो...
अपनी अन्तरज्योत की पावनता को श्वास में भरो...

अपनी अन्तरज्योत की सुरक्षा का अनुभव करो
जो आश्रय देती है, जो सान्त्वना प्रदान करती है

अपनी अन्तरज्योत का संरक्षण करो
वह केवल तुम्हारी है, तुम्हारे लिए भगवान की देन

सहस्त्रों वर्षों से चली आ रही परम्परानुसार
इस वर्ष दीपावली का त्योहार मनाते हुए,
इस समय में जब संसार में मन्थन चल रहा है,
मन में निम्न प्रार्थना का स्मरण रखते हुए
क्या तुम समय निकालकर इस पर ध्यान करोगे?

प्रार्थना

ॐ

विशुद्धासनोपविष्टः सुस्थिरसौम्यमानसः।

ध्यायामि हृदयेऽचलज्योतिः पूर्णसमर्पणभावः॥

प्रार्थनां मम स्वीकुरु हे भगवन्न् अखिलेश्वर।

नमस्कारं करोमि ते स्फुरणसंवित्सागर॥

ॐ

पवित्र आसन पर बैठकर
स्थिर एवं सौम्य मन के साथ
पूर्ण समर्पण भाव से
मैं हृदय की अचल ज्योत पर ध्यानस्थ हूँ।

हे भगवन्, अखिल सृष्टि के ईश्वर!
मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।
हे चिति के झिलमिलाते महासागर!
आपको मेरे प्रणाम!

***

मेरे अन्दर मेरी श्रीगुरु द्वारा जाग्रत नील ज्योत
मेरे अस्तित्व से सारा अन्धकार हर ले

मेरे अन्दर ऊर्ध्वाकाश से झरती
श्वेत ज्योत मेरे अस्तित्व को उन्नत करे

मेरे अस्तित्व में प्रवेश करती
धरती माँ की स्वर्णिम ज्योत
मुझे मेरी समस्त सीमित मान्यताओं से विमुक्त करे

प्रेम की ज्योत मेरा शुद्धीकरण करे
और यह विशुद्ध प्रेम मेरे अन्दर एवं बाहर जगमगाए

शान्ति की ज्योत मेरी आत्मा में
बसे सत्य के प्रति मेरे हृदय को खोले

भक्ति की ज्योत मेरे बन्धनकारी अहं का सर्वनाश करे
और भगवत्करुणा की मधुरता मेरा मार्गदर्शन करे

मेरा मन मेरे विचारों में निहित उज्ज्वल किरणों को ढूँढ़ पाए

मेरा हृदय मेरे एहसासों में प्रकाश-बीजों को खोज पाए

मैं अपने आस-पास छाई प्रभा की साधुता का
अपनी पूरी सत्ता के साथ संरक्षण करूँ—
अपने विचारों द्वारा
अपनी भावनाओं द्वारा
अपने शब्दों द्वारा
अपने कर्मों द्वारा

मैं दीपावली की नृत्य करती
प्रत्येक ज्योत की उपस्थिति का सम्मान करूँ

मैं दीपावली की प्रत्येक ज्योत की महत्ता को समझूँ

दीपावली की प्रत्येक ज्योत से उभरते गीत को
मैं अपने स्वर के स्पन्दन अर्पित करूँ

मैं हर दिन और हर रात दीपावली की
कल्याणकारी प्रकृति को महसूस करूँ

मैं जिससे भी मिलूँ उस मुलाक़ात में
दीपावली के हर्षोल्लास की अनुभूति करूँ

एक-दूसरे के साथ मिल-बाँटकर खाए जाने वाले
ज़ायकेदार पकवानों में
मैं दीपावली के रस का आस्वादन करूँ

मैं ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए

सदैव तत्पर रहूँ

मैं दीपावली की ज्योत को जो कृतज्ञता अर्पित करूँ
वह हर उस व्यक्ति का सहारा बने जो
अपने अन्तर-प्रकाश को खोजने के लिए तड़प रहा है

मेरी वाणी मेरे शुभ संकल्पों की शीतलता
को आभासित करे

मेरे कर्म मेरे उदार हृदय की कोमलता को अभिव्यक्त करें

दीपावली की कान्ति मुझे हमेशा यह सामर्थ्य देती रहे कि
मैं अपने आत्मबल को नित नवीन बनाए रखूँ

मेरा जीवन भगवान के प्रकाश का सच्चा प्रमाण हो

सप्रेम,
गुरुमाई चिद्विलासानन्द

© २०२५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।